झींगुर गा ना पाए!

फरीदा खल्अतबरी

एकलव्य का प्रकाशन

चित्रांकनः
अज़िता आरता

झींगुर गा ना पाए!

फरीदा खल्अतबरी

चित्रांकनः
अज़िता आरता

एकलव्य का प्रकाशन

झींगुर गा ना पाए!
JHINGUR GA NA PAYE!
कहानी: फरीदा खल्अतबरी
चित्रांकन: अज़िता आरता
अँग्रेज़ी से अनुवाद: सुमित त्रिपाठी

Orignally in Persian Published by Shabaviz
© Shabaviz, Tehran, Iran
हिन्दी अनुवाद © 2011 एकलव्य

संस्करण: जुलाई 2011/ 5000 प्रतियाँ
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 200 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-906971-1-8
मूल्य: ₹ 40.00

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल (म.प्र.) फोन: 2555442

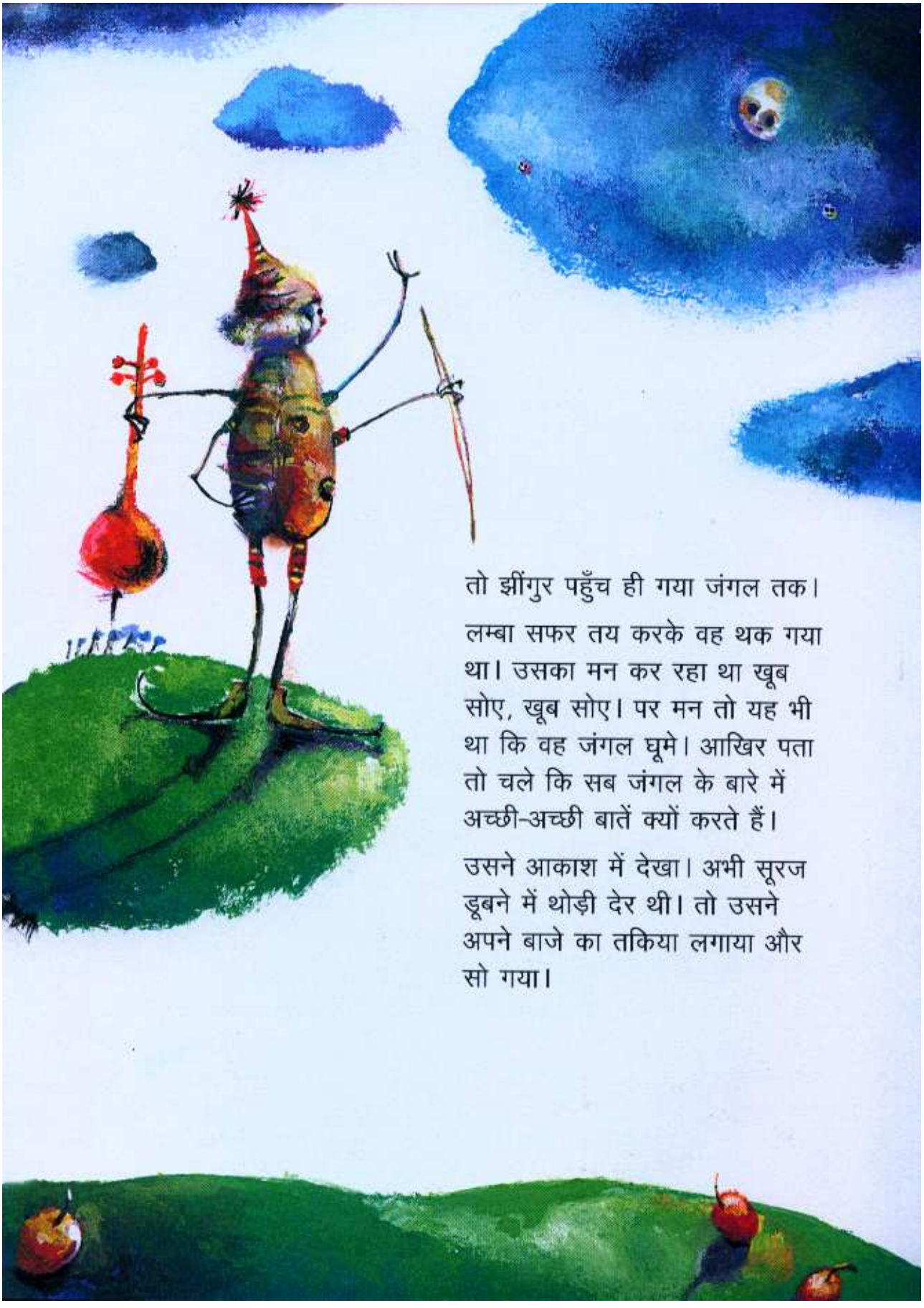

तो झींगुर पहुँच ही गया जंगल तक।

लम्बा सफर तय करके वह थक गया था। उसका मन कर रहा था खूब सोए, खूब सोए। पर मन तो यह भी था कि वह जंगल घूमे। आखिर पता तो चले कि सब जंगल के बारे में अच्छी-अच्छी बातें क्यों करते हैं।

उसने आकाश में देखा। अभी सूरज डूबने में थोड़ी देर थी। तो उसने अपने बाजे का तकिया लगाया और सो गया।

रोज़ रात को वह बाजा बजाता था गाता था। सुनकर चन्दा और तारे खिलकर दमक उठते। गड़ेरिए का कुत्ता जब रात में रखवाली करता तो उसी का गाना सुनकर जगा रहता था। ऐसे में अक्सर हल्की-हल्की हवा गेहूँ के खेतों में झूमती और नाचती।

पर हवा हमेशा कहती, "ये खेत सुन्दर हैं पर जंगल तो इससे भी सुन्दर है।"

और अभी हवा कह रही थी, "उठो झींगुर उठो। तुम इतनी दूर से यहाँ सोने थोड़े ही न आए हो।"

झींगुर ने आँखें खोल दीं। अँधेरा घिर रहा था। उसने मन में सोचा, "अरे अरे, देर हो रही है। सब मेरे गाने-बजाने की राह देखते होंगे। अच्छा किया हवा जो तुमने मुझे उठा दिया।"

झींगुर ने अपना बाजा उठाया और शुरू किया एक गीत। पर उसी समय एक चिड़िया ज़ोर-ज़ोर से गाने लगी। झींगुर का गाना किसी को सुनाई ही नहीं दिया।

झींगुर ने ज़ोर लगाया। और ज़ोर से गाया। पर उसे
पता था कि जब तक चिड़िया गा रही है तब तक
उसकी आवाज़ सुनाई देने से रही।

"अच्छा यही रहेगा कि मैं इंतज़ार कर लूँ जब तक यह कनफोड़ू चिड़िया अपना बेकार-सेकार गाना बन्द न कर दे। नहीं नहीं, मैं इतनी ज़ोर से गाऊँगा कि उसकी आवाज़ सुनाई ही न पड़े।"

झींगुर ने पूरा दम लगाकर गाया और बजाया पर फिर भी केवल चिड़िया की ही आवाज़ सुनाई पड़ती रही।

आखिर में चिड़िया उड़ तो गई पर तब तक झींगुर गा-गाकर थक चुका था। उसने बाजा एक तरफ रखा और आँख मूँदकर सुस्ताने लगा।

तभी...

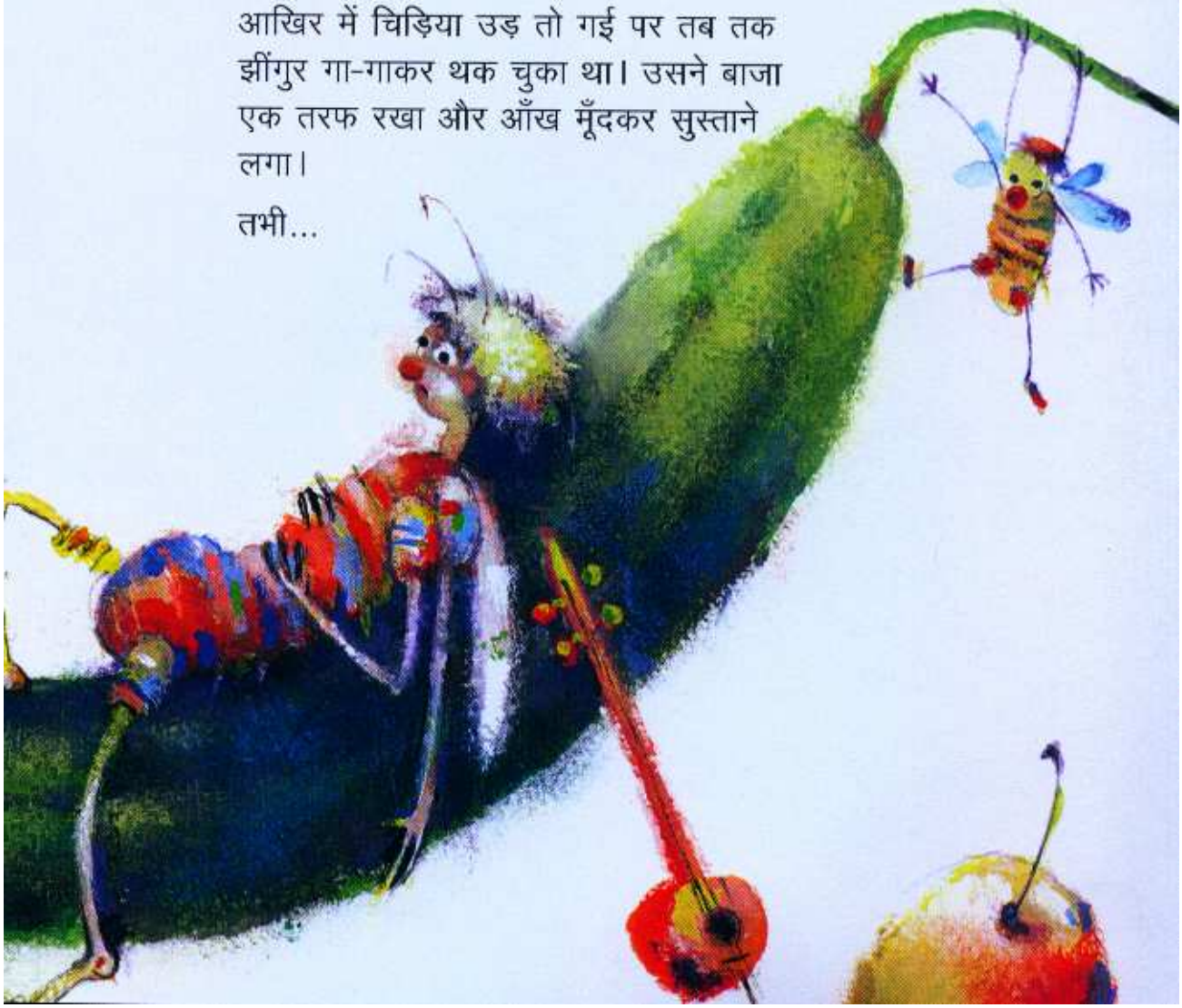

कहीं से गुर्राने की आवाज़ आई। झींगुर डर के मारे पत्तियों के नीचे दुबक गया। हड़बड़ी में उसका बाजा भी छूट गया।

उसने ज़ोर से चिल्लाकर अपनी आवाज़ चन्दा और तारों तक पहुँचाने की कोशिश की पर यह गुर्राहट तो उससे भी ज़ोर की थी।

"क्या फायदा मेरे गाने का, जब कोई सुन भी नहीं सकता।" उसने उसाँस भरी और पत्तियों में और अन्दर सरक गया। "अब इस भद्दी आवाज़ के चुप होने का इन्तज़ार करना पड़ेगा।"

पर जब गुर्राने की आवाज़ बन्द हुई तो दहाड़ने की आवाज़ शुरू हो गई।

झींगुर की तो सिट्टी-पिट्टी गुम। वह ऐसा डरा ऐसा डरा कि उसको लगा अब वह कभी गा ही नहीं पाएगा।

"मुझे यहाँ नहीं रहना, मैं भाग जाऊँगा। यह जंगल ठीक जगह नहीं है। मैं चन्दा-तारों के लिए कभी गा ही नहीं पाऊँगा। यहाँ कोई मेरी आवाज़ नहीं सुन पाता।"

"तुम्हें कैसे पता? न तुम गा रहे हो, न बजा रहे हो," हवा हँसते हुए बोली। वह पत्तों के बीच सरसरा रही थी।

झींगुर तुनककर बोला, "मैं तुमसे गुस्सा हूँ। अगर तुमने जंगल के बारे में अच्छी-अच्छी बातें न बताई होतीं तो मैं यहाँ कभी आता ही नहीं।"

पर हवा तो जा चुकी थी।

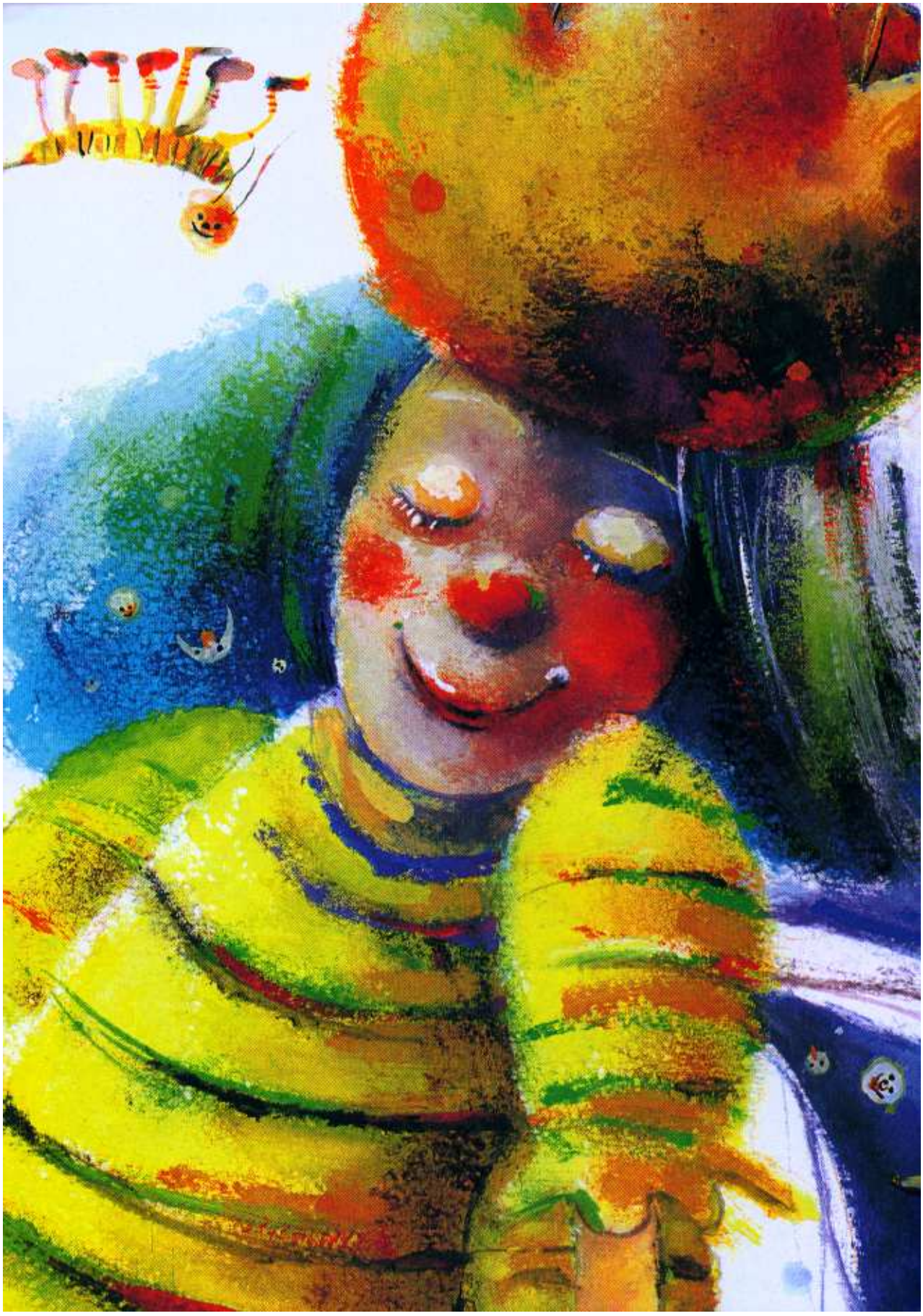

झींगुर पत्तों के नीचे से बाहर आया। उसने अपना बाजा ढूँढ निकाला। दहाड़ने की आवाज़ अभी भी आ रही थी। अनजाने में उसकी उँगलियाँ बाजे के तारों से छू गईं और मीठे-मीठे सुर निकले।

"कितने मीठे सुर हैं! क्यों न गाना हो जाए।"

झींगुर ने उधर देखा जिधर से आवाज़ आई थी। एक सुन्दर-सी झींगुरी पास खड़ी उसे देख रही थी।

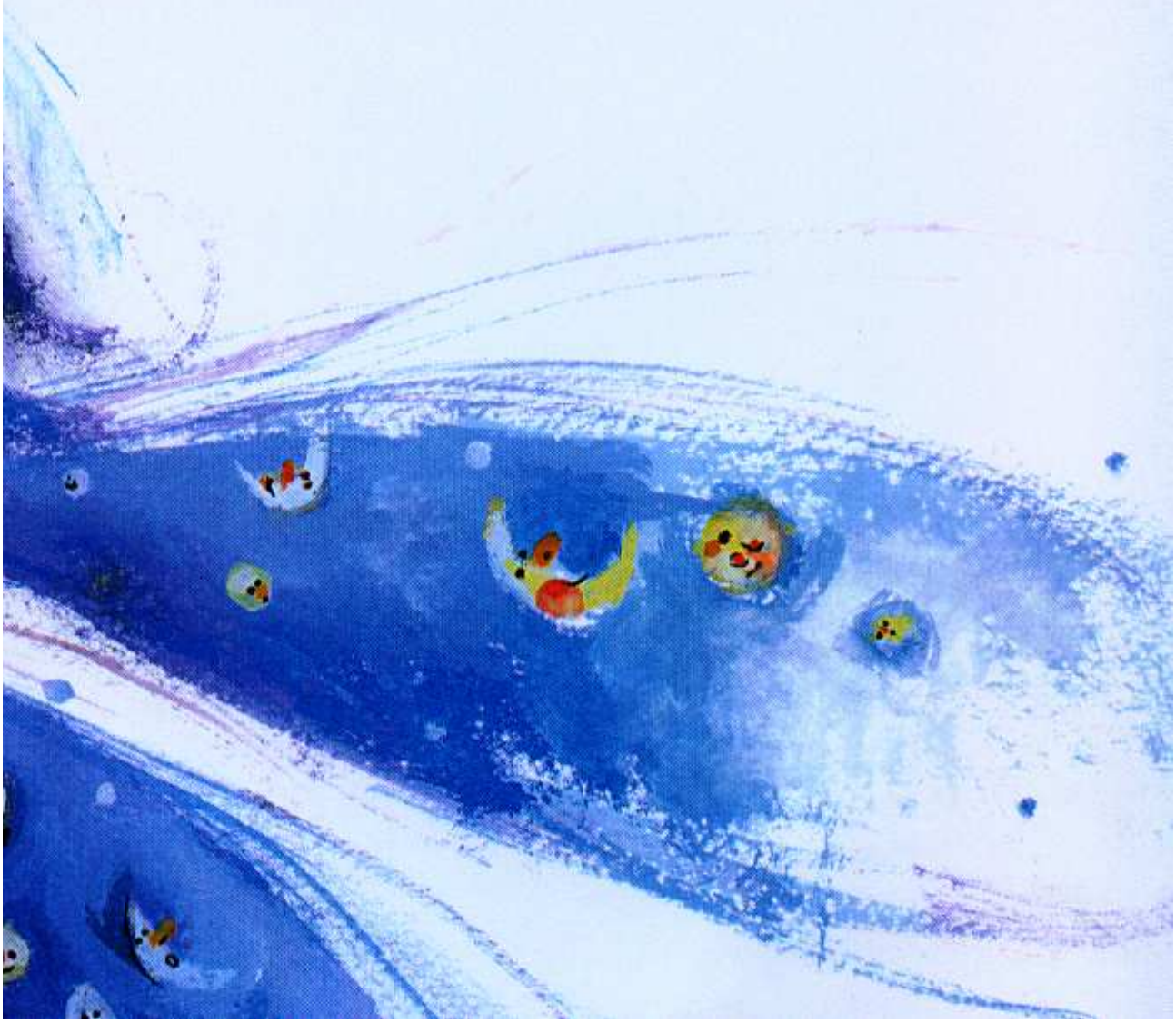

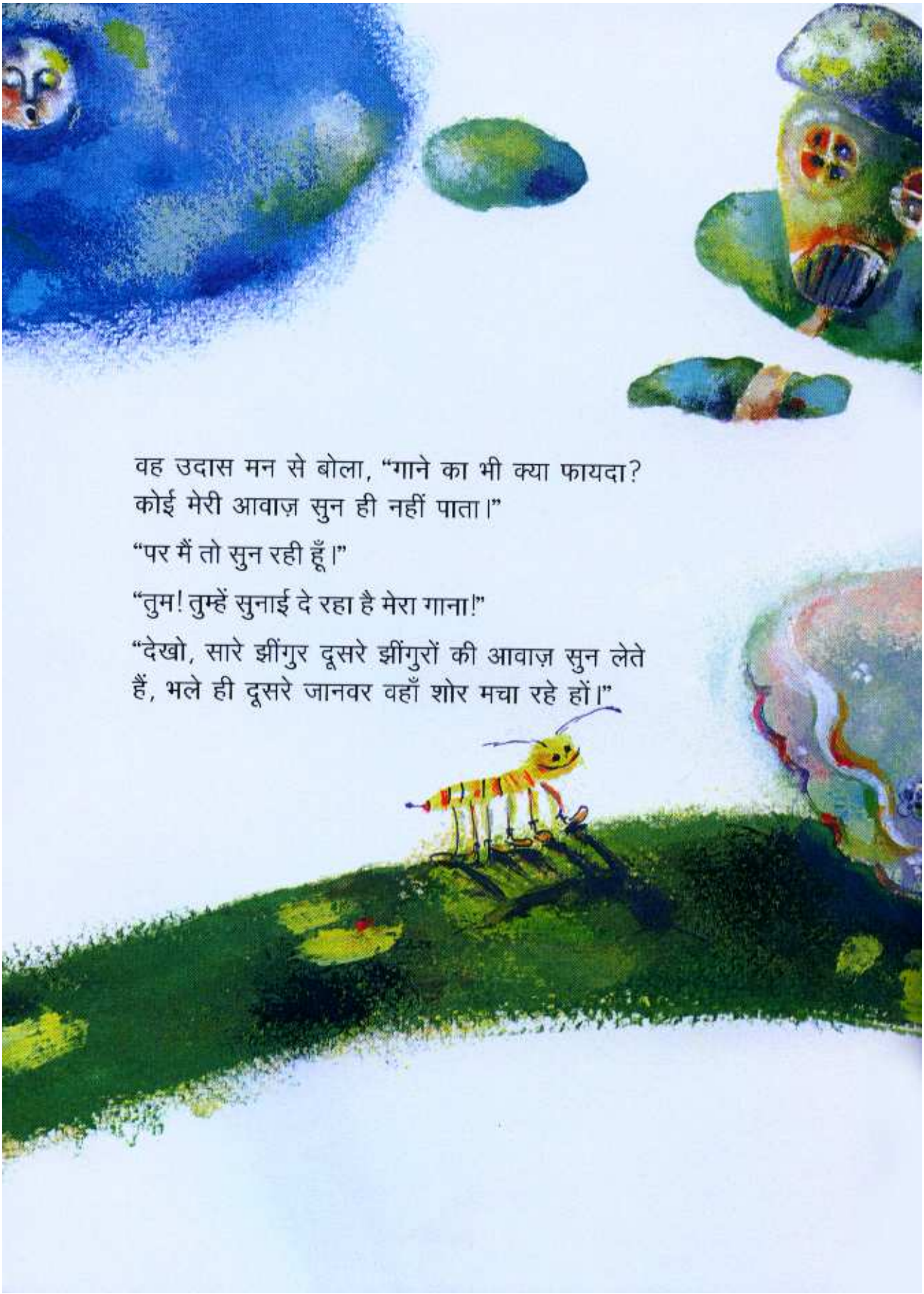

वह उदास मन से बोला, "गाने का भी क्या फायदा?
कोई मेरी आवाज़ सुन ही नहीं पाता।"

"पर मैं तो सुन रही हूँ।"

"तुम! तुम्हें सुनाई दे रहा है मेरा गाना!"

"देखो, सारे झींगुर दूसरे झींगुरों की आवाज़ सुन लेते
हैं, भले ही दूसरे जानवर वहाँ शोर मचा रहे हों।"

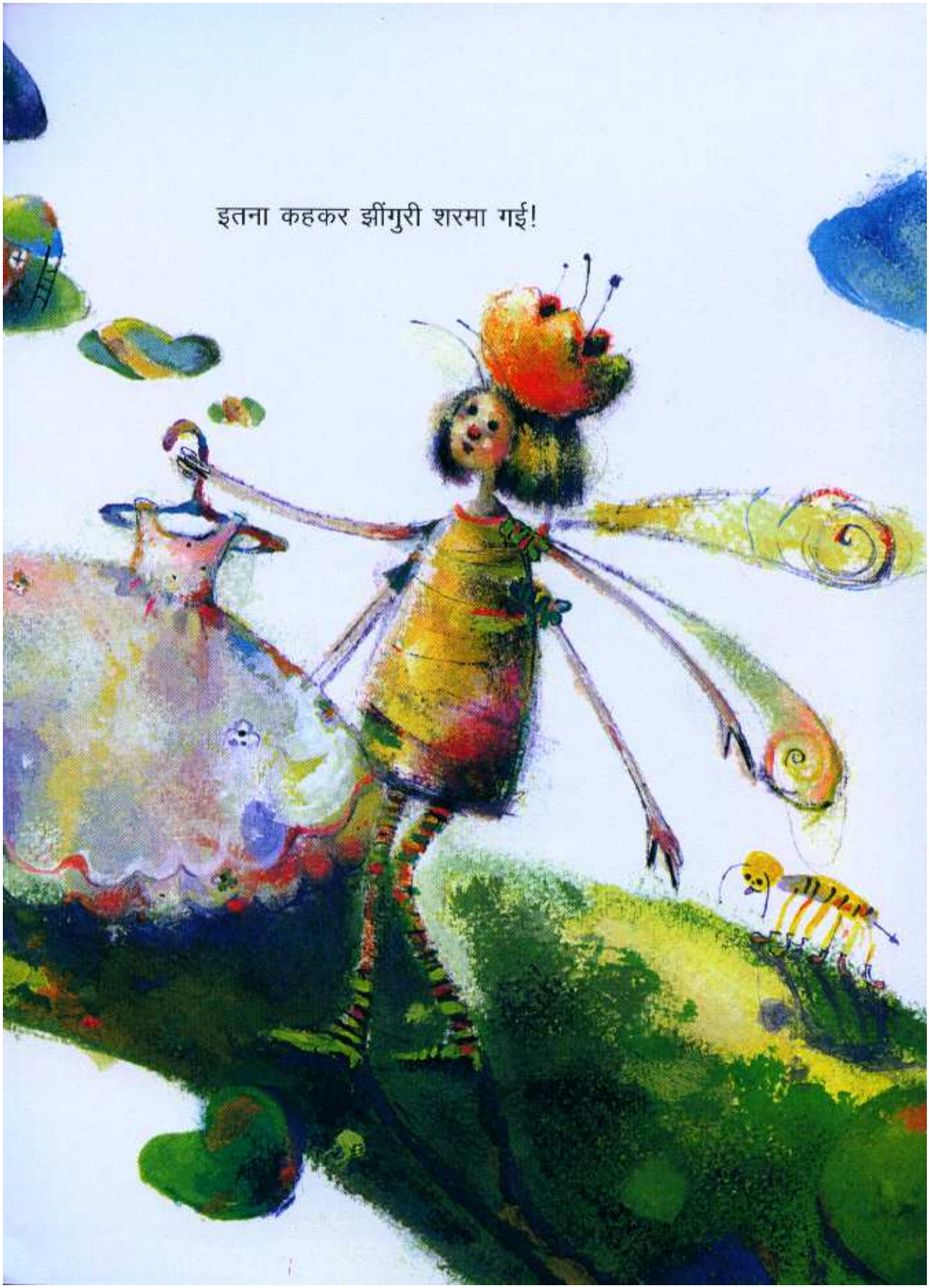
इतना कहकर झींगुरी शरमा गई!

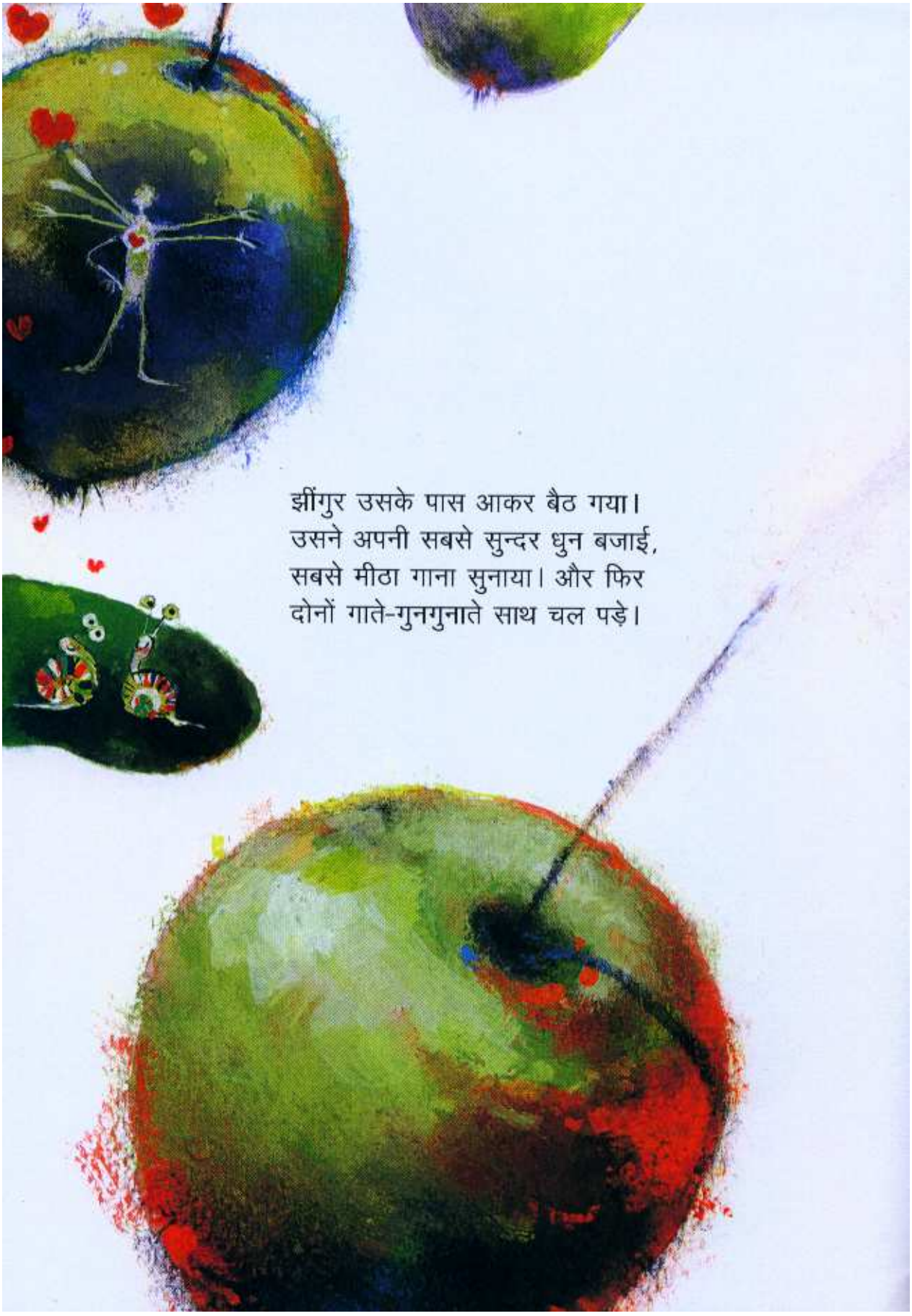

झींगुर उसके पास आकर बैठ गया।
उसने अपनी सबसे सुन्दर धुन बजाई,
सबसे मीठा गाना सुनाया। और फिर
दोनों गाते-गुनगुनाते साथ चल पड़े।

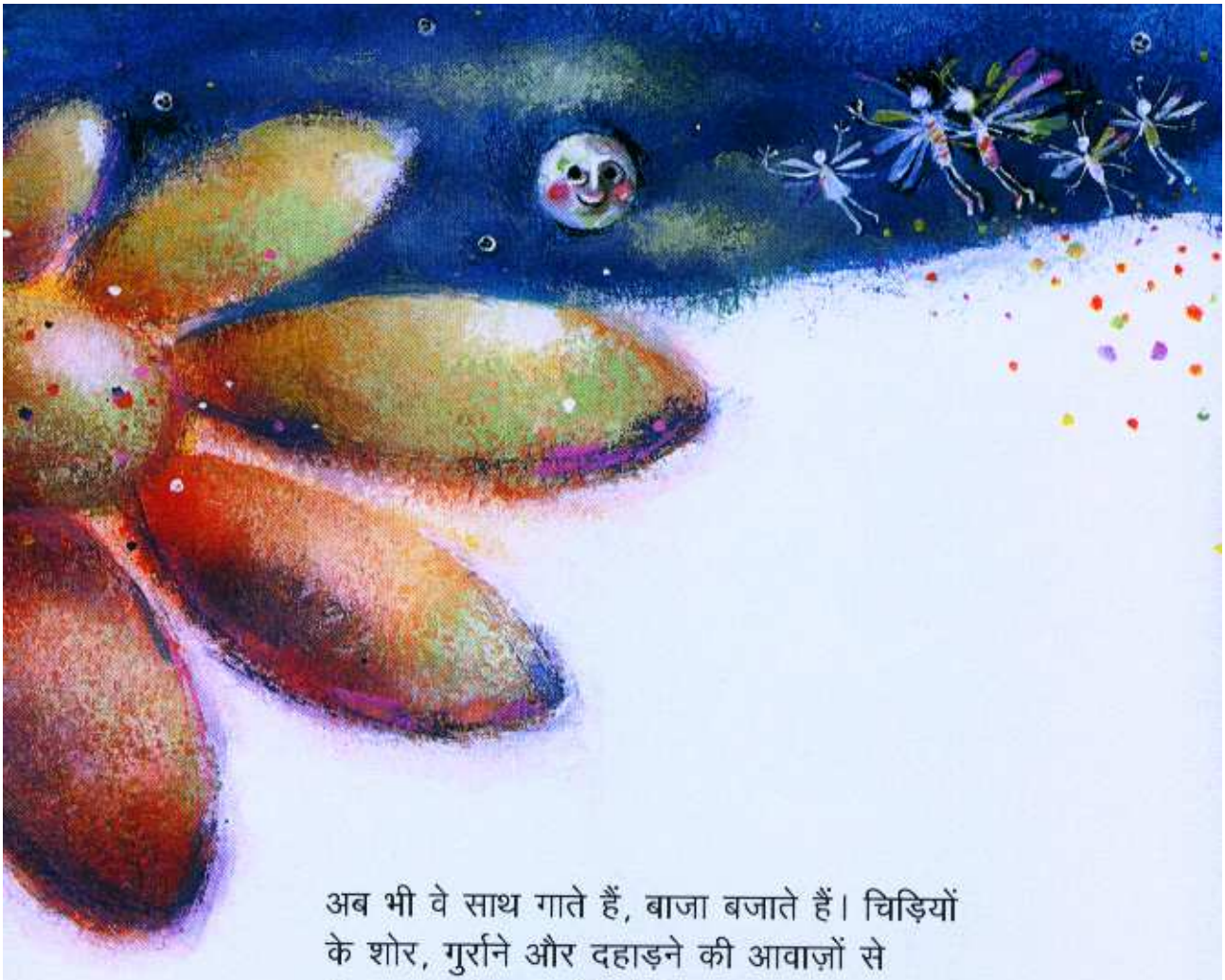

अब भी वे साथ गाते हैं, बाजा बजाते हैं। चिड़ियों के शोर, गुर्राने और दहाड़ने की आवाज़ों से बिलकुल परेशान नहीं होते।

छोटा-सा उनका घर अब नन्हें झींगुरों की आवाज़ों से भरा रहता है। अपने मम्मी-पापा जैसे वे भी गाने और बजाने की कोशिश कर रहे हैं!

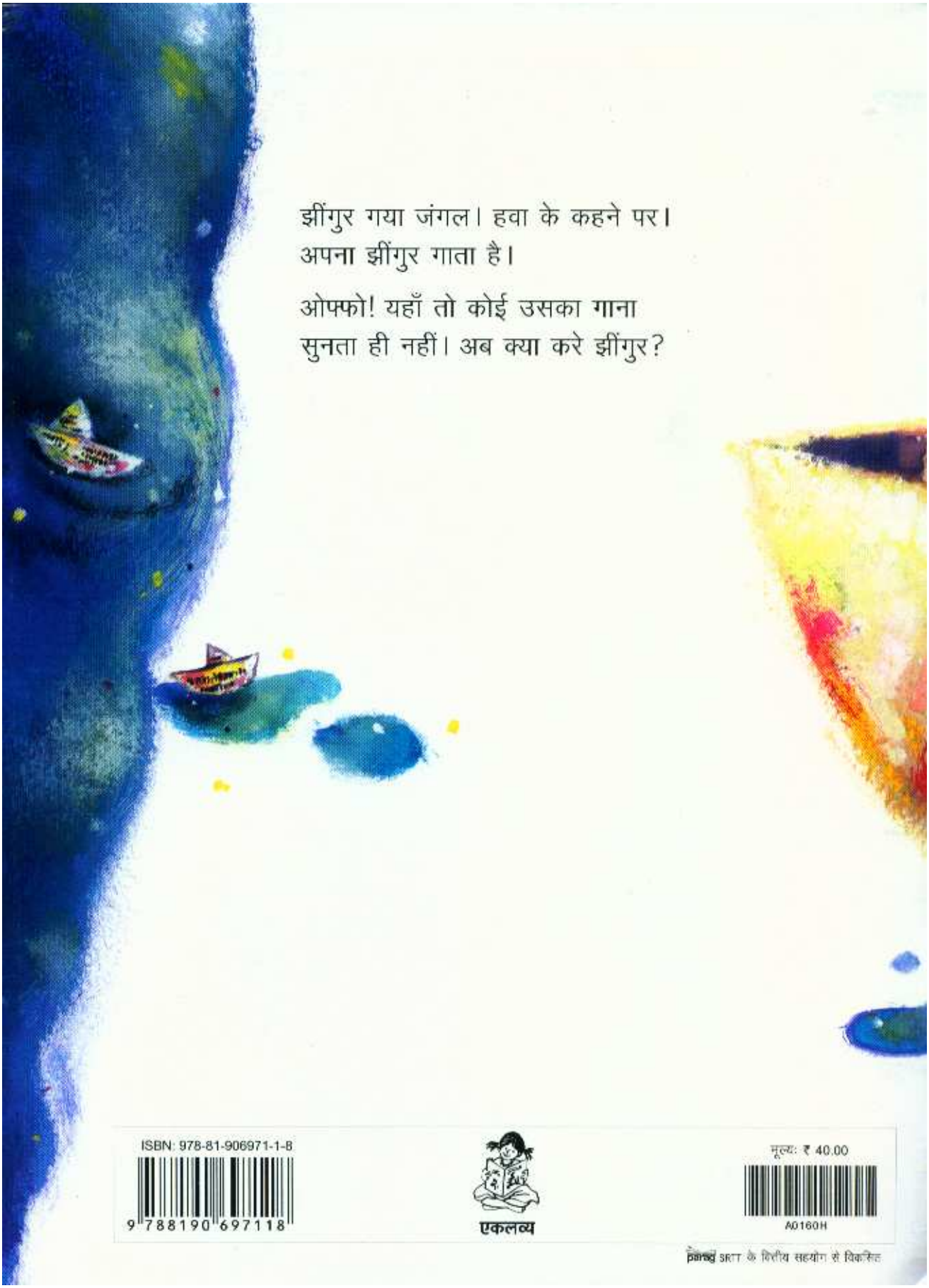

झींगुर गया जंगल। हवा के कहने पर।
अपना झींगुर गाता है।

ओफ्फो! यहाँ तो कोई उसका गाना
सुनता ही नहीं। अब क्या करे झींगुर?

ISBN: 978-81-906971-1-8
9 788190 697118

एकलव्य

मूल्य: ₹ 40.00
A0160H

parag SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित